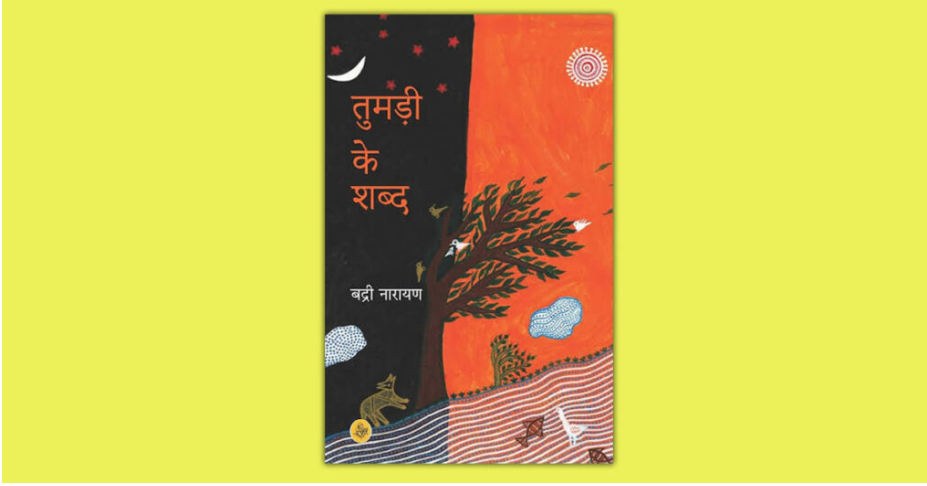


# ‘তুমড়ী কে শব্দ’ : সাম্প্ৰতিক সমাজ- সভ্যতাৰ সংবেদনা

ড° অনুৰাধা শৰ্মা



जिस तुमड़ी से निकला है शब्द  
वह कितना जोगी का है  
कितना जती का  
कितना राजा का  
कि कितना है जन का और कितना जनतंत्र का  
कहना कठिन है (तुमड़ी का शब्द)

हिन्दी भाषाৰ ‘তুমড়ী’ শব্দৰ অৰ্থ হৈছে শুকান লাউৰ ভিতৰৰ পৰা সাহাৰিণি পেলাই দি খোলাটোৰে সাজি উলিওৱা বাদ্যযন্ত্ৰ। অসমীয়াতো ‘লাউ লোৱা’ বুলি এটা শব্দ আছে— যাৰ ধাতুৰ পাত্ৰ কিনিবলৈ সামৰ্থ্য নাই তেওঁলোকে লাউৰ পাত্ৰ ব্যৱহাৰ কৰিছিল। সম্ভৱত সেই অৰ্থতেই লাউ লোৱা শব্দটো ব্যৱহাৰ হৈছিল। তদুপৰি অসমীয়া সমাজত লাউ টোকাৰী নামৰ বাদ্য এবিধো আছিল। যি অৰ্থতেই ব্যৱহাৰ নহওক কিয় ইয়াৰ লগত সাধু, সন্ত, বৈৰাগী, দৰিদ্ৰতা আদি ব্যঞ্জনাৰ জড়িত হৈ আছে। ভাৰতীয় সমাজৰ আধুনিক বিকাশত এই শব্দই যেন এক হেৰোৱাৰ অৰ্থ বহন কৰিছে। এই লাউ টোকাৰীৰ পৰা ওলোৱা শব্দ কিমান পৰিমাণে সাধাৰণ জনগণৰ বা কিমান পৰিমাণে গণতন্ত্ৰৰ কোৱা কঠিন; কিন্তু তাৰ মাজতেই কবিয়ে এক সিদ্ধান্ত স্পষ্ট কৰিছে—

पर मुनो! इस शब्द से निर्बल को बल मिलता है  
निर्धन को धन  
अंधे को आँख मिलती है  
और बहरे को कान  
इसमें निराकार को  
निराकार में भी साकार मिलता है (तुमड़ी का शब्द)

ইয়াৰ শেষৰ শাৰীটো খুব তাৎপৰ্যপূৰ্ণ; কবিয়ে নিৰাকাৰে সাকাৰ ৰূপ পায় বুলি কোৱা নাই; নিৰাকাৰে নিৰাকাৰতো সাকাৰ ৰূপ পায়। অৰ্থাৎ ইয়াৰ বাবে ফৰ্ম সলনি কৰিব নালাগে, যি ফৰ্মত আছে, তাৰ পৰাই আকাংক্ষা প্ৰাপ্তি হ’ব।

এই তুমড়ীৰ শব্দৰ শক্তি কবিয়ে কবিতাটোৰ শেষলৈ প্ৰকাশ কৰিছে এইদৰে— “তুমড়ী গাই গাই নাচি উপাসকে/ মোক মাজে মাজে উৎসাহিত কৰে/ ভয় নকৰিবা কবি/ এই শব্দ মৰাৰ লগে লগে জী উঠে।”

‘তুমড়ী কে শব্দ’ এই কবিতাটো বদী নাৰায়ণৰ *তুমড়ী কে শব্দ* কবিতাপুথিখনৰ অন্তৰ্গত এটা কবিতা। ২০২২ চনত সাহিত্য অকাডেমি পুৰস্কাৰেৰে সন্মানিত হিন্দী ভাষাৰ এই কবিতাপুথিখনত সৰ্বমুঠ ৫৬টা কবিতা সন্নিবিষ্ট হৈছে। অৱশ্যেই অকাডেমি পুৰস্কাৰৰ যোগ্যতাৰ মাপকাঠিৰে আমি ইয়াৰ আলোচনা কৰিব বিচৰা নাই। সভ্যতাৰ পৰিৱৰ্তিত প্ৰবাহত কিদৰে সাধাৰণ মানুহ হাৰি হাৰি জীয়াই থাকে, যুঁজি যুঁজি ভাগৰি পৰে, তেনে মানুহৰ সংঘৰ্ষ, পীড়া, জীৱনচৰ্যা ‘তুমড়ী’ৰ শব্দই কিদৰে কঢ়িয়াইছে, সেয়া তুলি ধৰাহে আমাৰ লক্ষ্য। সাম্প্ৰতিক সময়ত বিকাশৰ শ্লোগানে আকাশ-বতাই কঁপাই তুলিছে। এই বিকাশ এমুঠি বদিক গোষ্ঠীৰ সম্পদ আহৰণ আৰু লুণ্ঠনৰ মাজেৰে অহা এক চকু চাট মাৰি ধৰা আৱৰণহে; বাস্তৱ ইয়াতকৈ বহু বুঢ়া। ক্ষমতাহীন মানুহ হৈ পৰিছে অসহায় আৰু দিশহাৰা। বদী নাৰায়ণৰ কবিতাত এই সাম্প্ৰতিক ছবিখনো ব্যঞ্জনাৰূপে হৈ উঠিছে। ‘তুমড়ী’ শব্দটোৱেই আধুনিক ভাৰতত এক হেৰোৱাৰ দ্যোতনা। লোকসংস্কৃতিৰ এই উপাদান এতিয়া অকল লুপ্তপ্ৰায়ই নহয়, অৱহেলিতও। বদী নাৰায়ণে তেওঁৰ কবিতাৰ মাধ্যমেৰে সভ্যতাৰ সংকট বা বিকাশৰ ধামধুমীয়াত অৱহেলিত আৰু নিঃস্ব হৈ পৰা সাধাৰণজনৰ অনুচ্চাৰিত ধ্বনিক যেন বাগ্ময় ৰূপ প্ৰদান কৰিছে।

সাম্প্ৰতিক সভ্যতাৰ দৌৰত ক্ষমতা আৰু সম্পদে ৰাষ্ট্ৰৰ আগৰ শাৰীত থকা মানুহক মাটিৰ পৰা নি টুপ স্ফিয়াৰৰ ওপৰৰ সীমা পোৱাইছেগৈ। মূৰ তুলি চালেই সেই আতচবাজীয়ে চকু চাট মাৰি ধৰে, বিকাশৰ এই ৰূপে সকলোকে সন্মোহিত কৰে। কিন্তু এয়াই জানো বিকাশৰ স্বৰূপ হ’ব পাৰে? সত্য অসহায়জনক আৰু কঠোৰ। এই দৌৰৰ পৰা বাদ পৰা মানুহ আছে; দুৰ্ভাগ্যজনক কথাটো হ’ল— বাদ পৰা মানুহৰ কন্ঠই মূল ধাৰাক স্পৰ্শ কৰিব নোৱাৰে। কবিয়ে ‘দুঃখপুৰাণ’ কবিতাটোৰ অন্তিম শাৰীত লিখিছে—

जो आदमी संगत, पंगत और विकास से छूट जाता है  
जो टूट जाता है, जो हार जाता है  
उसके दुःख पर मैं लिखना चाहता हूँ  
एक पुराण  
अब तक के पुराणों से अलग  
पुराणों के अर्थ को तोड़ता  
छूट गए लोगों के दुःखों की एक दास्तान! (दुःख पुराण)

কাৰ পুৰাণ তেওঁ লিখিব বিচাৰে? যি মানুহক সংগ, গোট আৰু বিকাশৰ বাহিৰত এৰি দিয়া হয়, যি ভাঙি পৰে, হাৰি যায়। ইয়াতেই আমাৰ সভ্যতাৰ সেই বিভাজনৰ প্ৰতিফলন স্পষ্ট হৈ উঠিছে। ইয়াত deconstruction-ৰ কথা কোৱা হৈছে। ‘পুৰাণ’ শব্দই নিৰ্দেশ কৰিছে সেই ইতিহাস— যি ইতিহাস মূলধাৰাত আধিপত্যশীল লোকক কেন্দ্ৰ কৰি গঢ় লৈ উঠে। যুগে যুগে এই শ্ৰেণীৰ ইতিহাসেই কেন্দ্ৰীয় ধাৰা হৈ পৰিছে; সেয়ে কবিয়ে ইতিহাসৰ যুগ যুগ ধৰি চলি থকা নিৰ্মাণ ভাঙি দি বাদ পৰা মানুহৰ কাহিনীক লৈ এক নতুন ইতিহাস লিখিব বিচাৰিছে।

‘কৰীমন বী’ কবিতাটোত পৰিচিতি হেৰোৱাসকলৰ অস্তিত্বৰ প্ৰসংগ আনিছে। গছ, পাত, ফুল, চৰাই, ছোৱালী, পত্নী, বোৱাৰীৰ পৰা কৰীমন বীলৈ একেটা শাৰীতে অস্তিত্বৰ প্ৰসংগে পাৰিপাৰ্শ্বিকতা আৰু নাৰীক একাকাৰ কৰি তুলিছে আৰু শেষলৈ আনিছে সংখ্যালঘু সম্প্ৰদায়ৰ এক মহিলাৰ নাম। ভাৰতবৰ্ষৰ বৰ্তমান ধৰ্মীয় ভেদৰ ৰাজনৈতিক পৰিপ্ৰেক্ষিতত এই নামটোৱে আনিছে ধৰ্মনিৰপেক্ষ দেশখনত নাগৰিক অধিকাৰৰ আন এক প্ৰসংগ। কবিতাটোৰ কেইটামান শাৰী এনেধৰণৰ—

पेड़ सिर्फ पेड़ नहीं होते  
पेड़ों के भी अपने परिवार होते हैं ...  
लड़कियाँ सिर्फ लड़कियाँ नहीं होतीं  
लड़कियों के भी अपने नाम होते हैं  
बहुएँ सिर्फ बहुएँ नहीं होतीं  
बहुओं के भी अपने नाम होते हैं ...  
ये नाम सिर्फ नाम नहीं होते  
इन नामों का अपना इतिहास

और अपना भूगोल होता है  
 इन नामों का अपना वजूद होता है  
 इनकी अपनी हिस्सेदारी होती है  
 इनकी अपनी भागीदारी होती है  
 इनकी अपनी सत्ता और सम्पत्ति होती है...  
 और देखिए उधर करीमन बी  
 जनतंत्र का दरवाजा खटखटाने लगी है (करीमन बी)

साम्प्रतिक समयत आधुनिक वातावरणर यात्रिक पृथिवीखनत मानुह क्रमान्नेये माटिर् पबा दूबलै, लोकजीवनर पबा कृत्रिम यात्रिक जगतलै पर्यवसित हे गै आछे। माटिर् मिठा गोकुनर पबा आँतर् गैछे। जीवनर वास्तवता केवल नगर-चहर्, भौतिक वस्तु, कङ्क्रीटर् घर-दुराबे अना सभ्यतार स्वर वा तथ्याकथित विकाशर माजते सीमारुद्ध नहय। मानुहर् संवेदनशीलता इयातकै वह गतीर् आबू विसृत। आरहमान कालर पबाइ सकलो भौतिक प्राप्ति आबू आकाङ्क्षार् पिछते मानुहे जीव-जगतर् लगत सम्पर्क रक्षा आबू सहमर्मिता प्रकाश कर् आछिछे। सभ्यतार चाकचिक्यै वह समयत मानुहक मोहर द्रमजालत आरुद्ध कर्बि विकाबिलेओ मानर प्रेमर सत्य मनुष्यर अर्थ अनुधारन कबा व्यक्तिमात्रबेइ मनलै आछे। सेइ सत्य शिल्लिये आने, साहित्यके आने, आनकि एकेबाबे खाटि थोरा मानुहर् माजते सेइ सतयै अमोघ हे उठै। वदी नाबायणेओ तेओर् कर्बितात एइ सत्यक प्रकाश कर्बिछे लोकजीवन आबू इतिहासर संयोजनेबे। तेओर् कर्बितात जीवन उपलक्किर् एइ अनुसङ्गत भावतीय चूफी कर्बि 'कवीर्' एक विशेष व्यङ्गना हे वाबन्धर धबा दिछेहि। कवीर्ब शिक्षा आबू विचारबे भावतवर्षर साधारण हिन्दू आबू मुहलमानक सदायेइ मुक्त कर्बि आछिछे; अरुशेयै संकीर्ण रङ्गशीलसकलर बाबे कवीर् तेतियाओ चकुर् कुटा दाँतर् शल, एतियाओ। बाह्यक अर्थत आजिर् पृथिवी लाहे लाहे मुक्त हे पबिछे, विज्ञाने असाधारण प्रगतिबे मानर सभ्यताक गतीर्बारे प्रभावित कर्बिछे, उद्योगपति आबू वर्णिकगोष्ठीये विज्ञानर अरदानेबे निजर् शक्ति आबू श्रमता वृद्धि कर्बिछे, मानुह महाकाशर गल्लेणत जडित हे पबिछे, बकेट उङ्फेपण कर्बिछे इत्यादि, इत्यादि। किन्तु साधारण मानुहर् दुख-यत्नगा, असहायता, संकट, तीतिग्रस्तताइ सभ्यतार आकाशलङ्घी उक्तक तुच्छ कर्बि पेलोरा नाइने? वैश्विक प्राप्तिर् उन्नादनाबे मत मानुहक जीवनर रङ्गणतुङ्गताइ सेइ सत्यर सन्मुखते थिय कर्बाइ दिये। सेये आजिर् समयतो कवीर्बक किय आबू किमान प्रयोजन सेइ उपलक्कि कर्बिये विभिन्न कर्बितार माजत वाबन्धर उल्लेख कर्बि सौँरबाइ दिछे—

तुम समझते क्यों नहीं  
 कि इस सभ्यता को  
 कबीर की एक बार फिर आ पड़ी है जरूरत  
 कि एक बार फिर पुराने डिक़्क़ान में नई बात  
 कहने की बड़ी आवश्यकता है (तुम क्यों नहीं समझते)  
 \*\*\*

सोच यही सब  
 कबीर अपने बीजक पर  
 और अम्बेडकर अपने संविधान पर  
 कर रहे हैं पुनर्विचार  
 और साथ साथ  
 अपनी आत्मालोचना भी कर रहे हैं। (अमरपुर गाँव)

'भदोही वस ष्टेओ पब' कर्बिताटोत कवीर्ब एक विशेष निर्माण हे उठिछे। कवीर्ब थिय हे आछे भदोही वाह ष्टेओत वाहर् अपेक्षात। तेओर् ताब पबा याव विचारिछे— आबू आन ठाँलै यात्रा कर्बि। निश्चितबारे एइ यात्रा निश्चितिर् पबा अनिश्चितिलै, यि आहकालेइ नाहक, कवीर्ब दृट भयशून्य आबू निबुद्धेग।

खंजड़ी की आवाज को मन में सुमिरते  
 सोचा कबीर ने  
 कोई बात नहीं  
 कहीं कुछ नहीं होगा  
 तो सूरत चला जाऊँगा  
 यह सोचते कबीर यह भूल गए थे कि

सहमत के अनहद नाद के बावजूद  
वहाँ पिजाए जा रहे थे कई खंजर  
उनके इंतजार में... (भदोही बस स्टैंड पर)

‘वेगमपुरा एक्सप्रेस’ कविताटोतो कविये यात्रा बावे सेइसकलकहे उपयुक्त वुलि विवेचना कबिछे, मिसकले कवीरब दर्शनक उपलब्धि कबिब पाबे। इयात कवीरब नामोल्लेख कबा नाइ, किञ्च समग्र पृथिवीर शुभकामनाक विकशित कबि तोला कवीरब ‘टाई अफ़र’ब प्रसंग आछे—

जो ढाई आखर जानता होगा  
वही बेचेगा टिकट  
जो ढाई आखर जानता होगा  
वही पाएगा टिकट (वेगमपुरा एक्सप्रेस)

काबण, सकलो मन्दिर-मछजिद, तीर्थ, स्तान, मोल्ला, ठाकुर आदिब ओपबलै गै कवीरेइ एक सिद्धान्त दिछिल—

पोथी पढ़-पढ़ जग मुवा, पंडित भया न कोय  
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय (कबीर बाणी)

देबनागरीत लिखा ‘प्रेम’ शब्दटोते आटेटा आखर आछे, याब लगते मानुहब वास्तविक धर्म केन्द्रीभूत है थके वुलि कवीरे व्यक्त कबिछे।



कवि आबू कबिताब बावे वर्तमान समयत आहि पबा प्रत्याहानको वद्री नाबायणे सबल भाषाबे निर्माण कबिछे। साहित्यिकब राजनीति —एइ विषयटो उल्लेख कबिलेइ मिसकल जाडुब थखे उठे, अथच नान्दनिकतात डुब दि विशुद्ध साहित्यब दोहाइ सुविधाजनक स्थिति अरस्थान कबे, तेउंलोक राजनीतिब पबा प्रकृतते मुक्त थके ने? ‘राजनीति’ शब्दटोते कोनो निर्दिष्ट ‘राजनैतिक दल’ब सैते जडित थका-नथकाके नुसूचाय। बह समयत साहित्यब ‘पाठ’ एटाक बह व्याख्याबे ताब निहित अतिप्रियब पबा निलगइ थोबाराबो कौशल चले। आनकि एनेओ होब्रा देखा याय ये, प्रतिष्ठान-विरोधी लेखकब रचनाक तेउंर जनप्रियताब प्रति लक्ष्य बाथि जोबपूर्वक नियन्त्रण कबि शासकगोष्ठीये निजब पक्षत ब्यरहाब कबे। वर्तमान समयत एने कौशल सुलभ। उदाहरणस्वरूपे असमत ज्योतिप्रसाद आगबबाला, विशुप्रसाद बाता वा भूपेन हाजबिकाब यिबोब गीत प्रतिबोधब बावे सृष्टि हैछिल आजि शासकपक्षइ तेने विषयबोब निजब हातले आनि चबकारी पृष्ठपोषकतात उंगसर पाति ताक ब्यरहाब कबिछे। अथच यंत जनगणब शोषण-बखना, अत्याचारब विरोध आछे, सि सदाय जनगणब साहित्य आबू एइ साहित्यक जनगणे प्रतिबोधब शक्ति हिचापेइ ब्यरहाब कबि आहिछे। ताक नियन्त्रण आबू हस्तगत कबाब कौशलत बह समयत जनगण विद्रोह है पबे। एइ विषयटो वद्री नाबायणब ‘अगब आप कविता लिखे’ शीर्षक कविताटोत प्रकाशित हैछे—

जिसके खिलाफ आप लिखते हैं पच्चा  
 और यह पच्चा वह अपनी तारीफ में यूज कर ले  
 क्या करेंगे ऐसों का, कवि जी क्या करेंगे  
 जब पजाने के लिए न हो कोई पाट  
 तो अपने विचारों को कैसे तीक्ष्ण करेंगे  
 प्रतिरोध की कौन सी नयी राह चुनेंगे (अगर आप कविता लिखें)

एकविंश शतिकाब नव्य उदासीकबण अर्थनीतिब प्रभाबत आमाब देशब मध्याविठब पबिबर्तित चिन्ता-मूल्याबोधक लै  
 वद्री नाबायणे केवाटाठ कविता लिथिछे। बजाबब द्वाबा सकलो बस्तुब नियन्त्रण आबू मूल्या निर्धाबण कबाब यि प्रयास  
 बर्तमान समयब विशिष्टता हे उठिछे, तात मानूहब मूल्याठ बाद पबि याम- मानबताक एक बिमूर्त वा बजाबमूथी  
 नोहोब्रा बिषय वूलि गण्य कबा ह्य। धन, श्रमता, सम्पद, शक्ति – एहबोबेहै मानूहब दाम निर्दिष्ट वा नियन्त्रण कबि  
 थाके। इयाब बाबे दायी किञ्च मानूहै, मानूहब लालसाहै मानूहब मूल्या क्रमशः ह्रास कबि पेलाहैछे। एहै लालसा  
 अस्तुहीन। आमि मध्यावित श्रेणीटाे माथेँ दोबिछेँ आबू दोबिछेँ— एटाब पिछत एटाके आकांक्षा पूबणब दोबत।  
 आमि क्रमशः अक्लोपाछब चेपालै गै आछेँ। कवि एहै बिषयक लै शंकित आबू चिन्तित। 'भाबत बिजय' कविताटाेत  
 बजाब दोबब छबिखन तेठुँ देखूबाहैछे—

यही लालच है जो हमें  
 आदमी के स्तर से नीचे गिराती है  
 यही इच्छा है जो हमें घसीट कर क्यू में ले जाती है  
 यही हमें बैंक लोन से लेकर  
 बालमार्ट के कब्जे में पहुँचाती है  
 यही हमें उनके तुला-तराजू पर चढ़ाती है  
 वे हमें जिन्दा तौलते हैं  
 और तौलते हैं हमारे भीतर  
 अपने द्वारा पैदा किए गए  
 लालच की ताकत (भारत विजय)

श्रमतात थका सकलब बाबे मिडिया, मोबाइल आबू बजाबब दूबातिसक्किबे साम्राज्य बिस्तार कबाटाे एतिया सहज हे  
 पबिछे। काबण श्रमता याब हातत, तेठुँलोके यि देखूबाहैछे आमि सेयाहै देखिछेँ। बाबन्हाब आमाब सन्धुखत आवूत  
 हे यि बिषय वा बस्तुब प्रमुखन घटिछे आमि ताकेहै सत्य वूलि मानि ल'वलै बाध्य हैछेँ। साधाबण मानूहब बिचाब  
 इयाब धामथुमीयात हेबाहै गैछे। काबण इतिहास निर्माण तेठुँलोकब हातत, बजाब तेठुँलोकब हातत, प्रगति  
 तेठुँलोकब प्रदर्शनकामीताब जोब्राबत—

वैसे ही अब सत्ता एवं शक्ति के विचार आते हैं  
 मीडिया, मोबाइल, बाजार और आर्थिक कूटनीति के साथ  
 शक्तिवानों के विचार आते हैं  
 कमजोरों के विचार को हराते हुए  
 फिर अपना साम्राज्य फैलाते हैं (लगाओ गुहार)

पबिबर्तनब सौँतत गाँवोब लोहे लोहे नोहोब्रा हे आहिल। अथच गान्धीजीब 'ग्राम स्वबाज'ब धाबणा भाबतब  
 स्वाधीनताब समालुबालभाबे भाबतबवर्षब बिकाशब शिपात गभीबभाबे प्रोथित आछिल। बिकाशब बेखाडाल कंक्रिटब  
 पृथिवीते सीमारुद्र नाछिल, माटिब मानूहब मौलिक प्रयोजन तथा समबिकाशब लक्ष्य आछिल। कबिये सेये गाँबब  
 बिचाबब कथा कै आमि क'ब पबा क'लै गै आछेँ आबू तात साधाबण मानूहब पबिचिती किदबे शून्यत विलीन हे  
 गै आछे सेहै कथा अतिब्यक्त कबिछे—

धीरे-धीरे मर रहे हैं गाँवों के विचार  
 यह हम समझ नहीं पा रहे हैं  
 पर स्वर्ग में गाँधी जी  
 और जंगीगंज में रात में रोते हुए सियार  
 इस बात को अच्छी तरह समझ रहे हैं (विचार मृत्यु)

বৰ্তমান পৃথিৱীত দ্রুত গতিত বৃদ্ধি পোৱা উপভোক্তাবাদ, বাণিজ্যিকীৰণ আদিয়ে বিকাশৰ যি ৰূপ দেখুৱাইছে, সেয়াই উন্নতিৰ ছবিনে ? মানুহ দিনে দিনে অসুখী হৈ গৈ আছে, অসুখ-অশান্তিয়ে কোঙা কৰি তোলা সাধাৰণ মানুহৰ ছবিখন বদী নাৰায়ণৰ কেইবাটাও কবিতাত পোৱা যায়। পৃথিৱীৰ সৰ্ববৃহৎ গণতান্ত্ৰিক দেশখনত ধনী-দুখীয়া, ক্ষমতাশালী-ক্ষমতাহীন, উচ্চ-নীচ আদি অসংখ্য দ্বৈতবিৰোধৰ জটিলতাই আমাৰ গণতন্ত্ৰক চেপি ধৰিছে। অথচ প্ৰযুক্তিৰ চাকচিক্যে এনে ভ্ৰমজাল তৈয়াৰ কৰা হয়, যিয়ে চমকুত কৰি তোলে একোখন বিকশিত ভাৰত। সন্মুখৰ এই জকমকীয়া ৰূপটো মৃগ্নয় দেৱীমূৰ্তিৰ দৰে, যাক দেখি আমি মোহিত হওঁ অথচ পশ্চাদ অংশত থকা মাটিৰ লেপন আৰু শুকান খেৰৰ জুমুঠি আমাৰ চকুতেই নপৰে। দেশৰ গণতন্ত্ৰৰ এই অৱস্থাক উপলক্ষ্য কৰি তাৰ ভিতৰত থকা সামগ্ৰীয় মনোভাবক বদী নাৰায়ণে কেইবাটাও কবিতাত উদঙাই দিছে। উদাহৰণস্বৰূপে—

जैसे-जैसे गहरा रहा है लोकतंत्र  
असमानता की नई-नई कोटियाँ  
बनती जा रही हैं  
आत्मा देह के प्रति  
और देह आत्मा के प्रति  
क्रूर होती जा रही है। (अमरपुर गाँव)

অতি কম কথাত তেওঁ ভাৰতীয় গণতন্ত্ৰৰ স্বৰূপ উল্লেখ কৰিছে। ভাৰতৰ গণতন্ত্ৰ সৰ্ববৃহৎ, পৃথিৱীত বন্দিত কিন্তু সেই গণতন্ত্ৰৰ দেহটোহে কেৱল সুন্দৰ, প্ৰশংসনীয়। এই দেহটোত আত্মা নাই, আনহাতে আত্মাৰ আকৃতি দেহে নুশনে।

সামগ্ৰীয় ব্যৱস্থা কি ধৰণে এটা শৃংখল ৰূপত চলি আছে তাৰ এটি অৰ্থৱহ নিৰ্মাণ হ'ল 'হম' নামৰ কবিতাটো—

मैं पत्नी को मारता हूँ  
पत्नी बेटे को  
बेटा पालतू कुत्ते का कान  
उमैठ-उमैठ कर जोर से रुलाता है  
ऐसे ही तो जनगण का भाव आता है  
यह दुनिया का सबसे बड़ा  
जनतंत्र है  
जाति, धर्म और नस्ल के नाम पर एक दूसरे को मारते, दुत्कारते  
हम एक-दूसरे से  
सुर मिलते हैं।  
सुर मिलते हैं। (हम)

আনকি এই কবিতাটোত আমি ভাল গণতন্ত্ৰত বাস কৰিছোঁ বুলি ভবাটোৱে যেন কেনে এক প্ৰহসন সেই কথা প্ৰকাশ কৰিছে। কোনোবাই আমাক শোষণ কৰিছে, আমি প্ৰতিৰোধ কৰাৰ পৰিৱৰ্তে সুযোগ পালে আন কাৰোবাক শোষণ কৰিছোঁ; কোনোবাই আমাক দুখ দিছে, আমি কাৰোবাক দুখ দিছোঁ— এজনৰ সৈতে আনজনৰ এই সংযোগেৰে আমি ৰাষ্ট্ৰ সাজিছোঁ। কবিতাটোৰ শেষলৈ ৰাষ্ট্ৰৰ অখণ্ডতাৰ লক্ষ্যই বৈচিত্ৰ্যক হত্যা কৰি 'ঐক্য'ৰ আকৃতি লোৱাৰ ৰূচ বাস্তৱৰ পৰিস্থিতিৰ কথা ব্যক্ত কৰিছে। অখণ্ডতাই খণ্ডবোৰক হত্যা কৰি গঢ়ি তোলা এই ঐক্যৰ গণতন্ত্ৰক লৈ আমি গৌৰৱ কৰাৰ দৰে 'আয়ৰনি' বৰ্তমান ৰাষ্ট্ৰৰ পৰিৱেশত অতি তাৎপৰ্যপূৰ্ণ।

अनेकताओं के कल्ल पर  
'एकता' यहाँ लेती है आकार  
खंड-खंड को मार-मार  
'अखंडता' आती है  
हजूर! माई-बाप, सरकार  
क्या कहूँ, क्या न कहूँ  
ऐसे जनतंत्र की जम्हाई से  
आती है फासीवाद की बास (हम)

ভাৰতবৰ্ষই স্বাধীনতা লাভ কৰাৰ ইমান বছৰৰ পাছতো গোলামী মনোবৃত্তিৰ পৰা আমি যে মুক্ত হোৱা নাই, সেই দৃষ্টিভঙ্গীক লৈ ৰচনা কৰা এটা কবিতা হৈছে 'ৰাণী তেৰা নৌকৰ'। এতিয়াও ভাৰতীয় মানুহে সেই আনুগত্য প্ৰকাশ কৰে আৰু মোহিত হৈ ভৱিষ্যত প্ৰজন্মক কাহিনী কয়— "তুমি এই কথা জানি আচৰিত হ'বা ৰাণী। তোমাৰ পৰা স্বাধীন হোৱাৰ অত বছৰৰ পাছতো/ তোমাৰ এজন উপদেষ্টাই লিখা/ তোমাৰ জীৱনী তেওঁ পঢ়ি আছে/ জীৱনী পঢ়ি আছে আৰু মুগ্ধ হৈ উৎফুল্লিত হৈছে/ নিজৰ ল'ৰা-ছোৱালীক শুনাইছে/ তুমি আজিও ইয়াত কিমান জীৱন্ত ৰাণী!"

এফালে ব্ৰিটিছ উপনিবেশৰ আৰেশ আৰু আনফালে বিশ্বায়নকেন্দ্ৰিক বাতাবৰণৰ পৰিপ্ৰেক্ষিতত পৃথিৱীৰ শক্তিশালী দেশ আমেৰিকাৰ প্ৰতি আমি নতজানু হৈ থাকোঁ। মুক্ত অৰ্থনীতিৰ আন এক উপনিবেশত আমি যেন বাস কৰিছোঁ। বিশ্বায়নৰ প্ৰভাৱৰ এই পৰিৱৰ্তিত পৰিৱেশক লৈয়ো 'তুমুড়ী'ৰ পৰা ওলোৱা শব্দৰে আমাৰ অৰ্থনৈতিক ব্যৱস্থাৰ ছবিখন তেওঁ প্ৰকাশ কৰিছে 'হায় বৰেলী কে বাজাৰ' নামৰ কবিতাটোত। 'নাচিৰীগঞ্জৰ বজাৰত বিক্ৰী হয় আমেৰিকাৰ ঘেঁহু/ আৰাৰ গুডামত পঢ়ি যায় নাচিৰীগঞ্জৰ বজাৰৰ ঘেঁহু।" এই ছবিখন এতিয়া সৰ্বত্ৰ সুলভ। সেইদৰে, 'প্ৰাতঃভ্ৰমণ কা আধুনিক পুৰাণ' কবিতাটোত সমকালৰ অৰ্থনৈতিক-ৰাজনৈতিক পৰিৱেশত প্ৰাতঃভ্ৰমণৰ ছবিখনে নগৰীয়া মধ্যবিত্তৰ পুতলা আচৰণৰ ছবিখন দাঙি ধৰিছে। চৌপাশৰ তথ্যৰ ভিতৰত আমি নিজক হেৰুৱাইছোঁ, স্বপ্নাতুৰ হৈ 'ইলুচন'ৰ মাজতে ৰৈ গৈছোঁ। কবিতাটোৰ শেষৰ ফালে আছে— "চুলি সৰা বন্ধ কৰিবলৈ/ বাবা ৰামদেৱৰ পতঞ্জলি যোগ নিয়ম অনুসৰি/ নিজৰ নখ ঘাঁহি ঘাঁহি/ জঁপিয়াই গৈ থাকিল। আজি ঐশ্বৰিক হৈ উঠিছে মৰ্ণিৱাক/ যেন এফালে ইন্দ্ৰই খোজ কাঢ়িছে/ আনফালে কুৰেৰ/ আৰু আমি একেলগে/ মৰ্ণিৱাক কৰি আছোঁ।"

সংকলনৰ আন এটি তাৎপৰ্যপূৰ্ণ কবিতা হৈছে— 'ম্যেয় এক উপনিবেশ' শীৰ্ষক কবিতাটো। ইয়াত কবিয়ে নাগৰিকৰ অন্তঃৰাত্নাক যেন টুকুৰিয়াই দিছে। নাগৰিকৰ উগ্ৰতা আৰু হিংসাই কিদৰে মনুষ্যত্বৰ ভিতৰত থকা আত্মাক বশ কৰি তোলে, সেই বাস্তৱতাকে কবিয়ে উপলক্ষ্য কৰিছে। পইচাৰ কোনো জাতি নাই, বজাৰৰ কোনো ধৰ্ম নাই; কিন্তু বাস্তৱত বজাৰত কি হৈ আছে! জাতি ধৰ্ম আৰু বৰ্ণগত গোৰৱত মানুহ আক্ৰমণাত্মক হৈ উঠিছে। কবিতাটোৰ শেষৰ ফালে কবিয়ে লিখিছে—

मैं आजाद इंडीविजुअल  
लगत हूँ आपको  
पर सच में  
मैं अपने देश का उपनिवेश हूँ  
जिसमें राज करते हैं  
आधुनिक चालाकी  
पारम्परिक क्रूरता भोग, उपभोग, लालच  
जाति, धर्म और  
हिंसक-सा एक राष्ट्रीय गर्व (मैं एक उपनिवेश)

আধুনিক নাগৰিক, যিসকলক ব্যক্তি স্বাধীনতাৰে সমৃদ্ধ মুকলি মনৰ বুলি গণ্য কৰা হয় তেওঁলোকৰ মাজত লুকাই থকা চালাকী, ফুৰতা, ভোগ-উপভোগ-লালসা আৰু জাতি-ধৰ্মৰ এক হিংস্ৰ দৃষ্টিভঙ্গীকে ৰাষ্ট্ৰীয় গৰ্ব বুলি বিচাৰ কৰা ফোপোলামি — এই ৰূপটোক কবিয়ে নিৰ্দ্ধিহাই প্ৰকাশ কৰিছে। এয়া আধুনিক পৃথিৱীৰ নগ্নতা। এই সংকলনৰ শেষৰ কবিতাকেইটাত ধুমিলৰ *संसद से सड़क तक* কবিতাপুথিৰ কবিতাৰ অনুৰণন পোৱা যায়— য'ত তেওঁ শাসক, সমাজ আৰু ব্যক্তিক নিজৰ নিজৰ প্ৰকৃত স্বৰূপ প্ৰতিফলিত হোৱা আয়নাখন দেখুৱাইছে। বিশেষকৈ স্বতন্ত্ৰ ভাৰতৰ গণতন্ত্ৰৰ অৱক্ষয়, নকল ৰাষ্ট্ৰবাদেৰে ক্ষমতা আহৰণ আৰু উপভোক্তাবাদৰ প্ৰসাৰণ তথা স্বাৰ্থসিদ্ধি, ৰাষ্ট্ৰৰ অথগত্যক জনমোহিনী ৰূপত উদ্ভাসিত কৰি তুলি সৰু সৰু মানুহৰ ভাষা-সংস্কৃতিৰ ওপৰত বুলডজাৰ চলোৱাৰ প্ৰক্ৰিয়া, সাধাৰণ মানুহৰ অসহায়তাক তুলি ধৰিছে। 'পেড় কী শোক সভা' কবিতাটোত সাধাৰণ মানুহৰ ছবি ৰূপকধৰ্মী কৰি ব্যক্ত কৰিছে। সেইদৰে, 'সপনে সৰকাৰী' কবিতাটোত চাকৰিজীৱীসকলৰ আত্মনিৰ্ভৰতাৰ আঁৰত থকা 'হয় হুজুৰ' আচৰণৰ চাকৰ পৰ্যায়ৰ বিড়ম্বনাক প্ৰকাশ কৰিছে এইদৰে—

कमी-कमी तो लगता है  
मैं मत्ता के बिल में घुसा एक  
रंगीन बूहा हूँ...  
दूसरे थरदों में कहें तो  
जनतंत्र अगर और कुल्ल नहीं

मूड्रियों की गणना है  
तो मैं मजे ले रहा हूँ  
उसी की पीठ पर बैठा हुआ। (सपने सरकारी)

निर्बीहजनৰ বিৰুদ্ধে চলা আতিশয্য, অন্যায়ৰ ফলত যি সংবেদনশীলতাৰ সৃষ্টি হয়, সেয়া সাহিত্যত কোনো নতুন কথা নহয়। প্ৰান্তীয় ইতিহাস বুৰঞ্জীৰ কিতাপত নাথাকিলেও, সাহিত্যৰ মাজত প্ৰকাশ কৰাৰ সমান্তৰাল ধাৰা এটা ভাৰতীয় সাহিত্যত চলি আহিছে। কিন্তু গণতন্ত্ৰৰ মোল নুবুজা মানুহৰ হাতত যেতিয়া শাসনৰ বাঘজৰী থাকে, ব্যক্তিস্বাধীনতাক অগ্ৰাধিকাৰ দিব খোজা আধুনিক নাগৰিকে যেতিয়া জাতি, ধৰ্ম আৰু বৰ্ণ গৌৰৱেৰে সামাজিক পৰিচিহ্নিতক অগ্ৰাধিকাৰ দি পৰস্পৰ বিৰোধী চেতনা প্ৰকাশ কৰে আৰু এনে পৰিৱেশত মিডিয়াও যেতিয়া শাসনতন্ত্ৰৰ প্ৰতি আনুগত্যশীল হৈ পৰে—তেতিয়া 'ৰাষ্ট্ৰ'ৰ সত্য প্ৰকাশ কৰা সহজ কথা নহয়। বণিক, শাসক আৰু সম্পদ—ব্যৱস্থাৰ ত্ৰিভুজটোৰ শীৰ্ষবিন্দুত এই তিনিটা একত্ৰিত হৈ পৰিলে আনুভূমিক স্থানত থকা তুণমূলৰ মানুহৰ জীৱন পানীত হাঁহ নচৰাৰ দৰে হৈ পৰে। এই পৰিস্থিতিত ভোগবাদ, শোষণ, অসাম্য আৰু হিংসাৰে ভৰি পৰা আমাৰ ৰাষ্ট্ৰ আৰু গণতন্ত্ৰৰ বিবশতাক বদ্বী নাৰায়ণে অতি সংবেদনশীল ৰূপত *তুমুড়ীকে শব্দ* কবিতাৰ মাজত অনন্য ৰূপত তুলি ধৰিছে।